Total No. of Printed Pages—5

3 SEM TDC HINH (CBCS) C 5

2020

(Held in April–May, 2021)

HINDI

(Core)

Paper : C–5

(छायावादोत्तर कविता)

Full Marks : 80
Pass Marks : 32

Time : 3 hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 1×8=8

(क) केदारनाथ अग्रवाल किस विचारधारा के सशक्त कवि हैं?

(ख) नागार्जुन का वास्तविक नाम क्या है?

(ग) ''वट के नीचे खड़ी खोजती लिये सुजाता खीर तुम्हें।'' यह पंक्ति किस कवि की है?

(घ) माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा किस पत्र का संपादन किया गया?

(ङ) 'अज्ञेय' उपनाम से प्रसिद्ध कवि का पूरा नाम क्या है?

(च) छायावाद के चार स्तंभ कौन हैं?

(छ) किस प्रकार की झाँकी सक्सेना की कविता में अधिक मिलती है?

(ज) ''हम राही राहों के अन्वेषी हैं।'' यह किस कवि का नारा है?

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 4×4=16

(क) केदारनाथ अग्रवाल की कविता में प्रकृति-चित्रण पर संक्षेप में लिखिए।

(ख) ''मुझे तोड़ लेना वनमाली!
उस पथ पर देना तुम फेंक।''

इस कथन का भावार्थ लिखिए।

(ग) 'अज्ञेय' के काव्य की भावपक्षीय विशेषताओं को संक्षेप में लिखिए।

(घ) ''गिरिजा कुमार माथुर समय की धारा के साथ बहते हैं, उनकी विचारधारा कभी स्थायी नहीं रहीं।'' इस कथन की पुष्टि कीजिए।

(ङ) रामधारी सिंह 'दिनकर' का साहित्यिक परिचय दीजिए।

3. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8×4=32

(क) माती थाप हवा की पड़ती,
पेड़ों की बज रही ढुलकिया,
जी भर फाग पखेरु गाते,
ढरकी रस की राग-गगरिया!

मैंने ऐसा दृश्य निहारा,
मेरी रही न, मुझे खबरिया,
खेतों के नर्तन-उत्सव में,
भूला तन-मन गेह-डगरिया।

अथवा

कहाँ गया धनपति कुबेर वह, कहाँ गयी उसकी वह अलका?
नहीं ठिकाना कालिदास के व्योम-वाहिनी गंगाजल का,
ढूँढा बहुत परन्तु लगा क्या, मेघदूत का पता कहीं पर
कौन बतावे यह यायावर, बरस पड़ा होगा न यहीं पर!
जाने दो, वह कवि-कल्पित था,
मैंने तो भीषण जाड़ों में, नभ-चुम्बी कैलास-शीर्ष पर
महामेघ को झंझानिल से गरज-गरज भिड़ते देखा है।

(ख) कैसा अखंड यह चिर-समाधि?
यतिवर! कैसा यह अमिट ध्यान?
तू महाशून्य में खोज रहा
किस जटिल समस्या का निदान?
उलझन का कैसा विषम जाल?
मेरे नगपति! मेरे विशाल!

अथवा

थक चुका, कि मैं कैसे डोलूँ?
इन गीतों के बेगाने में
मर चुका, कि मैं किससे बोलूँ?
इन गीतों के वीराने में!

(ग) साँप!
तुम सभ्य तो हुए नहीं
नगर में बसना
भी तुम्हें नहीं आया।
एक बात पूछूँ—(उत्तर दोगे?)
तब कैसे सीखा डँसना—
विष कहाँ पाया!

अथवा

जी, माल देखिये दाम बताऊँगा,
बेकाम नहीं है, काम बताऊँगा;
कुछ गीत लिखे हैं मस्ती में मैंने;
कुछ गीत लिखे हैं पस्ती में मैंने;
यह गीत, सख्त सरदर्द भुलायेगा;
यह गीत पिया को पास बुलायेगा।

(घ) कितनी चुप-चुप गयी रोशनी छिप-छिप आयी रात,
कितनी सिहर-सिहर कर अधरों से फुटी दो बात;
चार नयन मुसकाये, खोये, भींगे, फिर पथराये,
कितनी बड़ी विवशता जीवन की कितनी कह पायें।

अथवा

धूप चंदन रेख सी
सल्मा-सितारा साँझ होगी
चाँदनी होगी न तपसिनि
दिन बना होगा न योगी
जब कली के खुले अंगों पर लगेगी
रंग-छाप वसंत की,
कामिनी सी अब लिपट कर सो गई है
रात यह हेमंत की।

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 12×2=24

(क) केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में प्रकृति का जैसा सहज-सजीव अंकन हुआ है, उसकी समीक्षा कीजिए।

(ख) कवि का परिचय देते हुए 'बुद्धदेव' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

(ग) 'अज्ञेय' की प्रयोगधर्मिता और इनकी काव्य-भाषा के विषय में अपने विचार प्रकट कीजिए।

(घ) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उनकी कविता 'सुहागिन का गीत' का सार लिखिए।

★★★